(232)

विषय : सागर में लहरें क्यों उमड़ रहे हैं?

सागर में लहरें क्यों उमड़ रहे हैं?

मेरा मन आज
बेचैन है।
हर एक पल
तड़प रहा -
हूँ मैं।

कैसे बताऊँ?
किसको बताऊँ?
यही एक सवाल -
बार-बार मन -
में उभर आता है।
'मैंने क्या पाप किया?'
मैं एक लड़की हूँ
क्या ये एक पाप है?
बड़े ओर से तो
कहते हो -
लड़की माँ है।
लड़की बहन है।
बेटी है।
लेकिन करते कुछ ओर।
इस विशाल गगन में -
पंख फैलाकर उड़ना -
चहता था मैं।

लेकिन आज दूर है
सूरज की किरणों से -
चाँद की वो चाँदनी से।
मेरा मन आज
अशांत से वो -
सागर जैसा।
कोई पूछा
सकता है,
सागर में लहरें
क्यों उमड़ रहे हैं?
इसे जवाब मिलेगा
वो अपनी प्रेमिका -
वो रेतीले किनारें
को चूमना चाहता है।
इसे देखने केलिए
बेताब है।
मगर कोई न पूछा
बेचैन क्यू हूँ मैं।
क्योंकि पता है
उन्हें मैं भी
एक शिकार बन गयी।
इस गंदी दुनिया
की शिकार।
सागर की लहरें
शांत हो जायेगा
लेकिन मैं नहीं।
मेरी आँखों की
ज्वाला इसे

इस केलिम
बेताब हैं ये लहरें।
ये लहरें इस
महासागर में
उसे खोज रहे हैं।
मिल जाय तो और नहीं।
कोई माफ़ नहीं_
तुम तड़पोगे -
जैसा मैंने तड़पा था।
कोई माफ़ नहीं -
तुम चिल्लाओगे
जैसे मैंने चिल्लाया था।

———— o